Dr DHANVIR PRASAD

ASSISTANT PROFESSOR (G.T)

DEPT.OF.PSYCHOLOGY

C.M.J COLLEGE DONWARIHAT(KHUTONA)MADHUBANI

L.N.M.U DARBHANGA

MOBILE NO:- 6206696451

E-MAIL- dhabeerparasad@gmail.com

THEORIES OF PERCEPTION

प्रत्यक्षीकरण एक जटिल ज्ञानात्मक प्रक्रिया है, जिसके स्वरूप के संबंध मे मनोवैज्ञानिकों के बीच मतभेद है। इसी मतभेद के कारण प्रत्यक्षीकरण के कई सिद्धांत विकसित हुए, जिसमें संरचनावादी सिद्धांत, गेस्टाल्ट सिद्धांत, व्यवहारवादी सिद्धांत, अभिप्रेरणात्मक सिद्धांत आदि प्रमुख हैं। यहां हम गेस्टाल्ट सिद्धांत का वर्णन करने जा रहे हैं।

गेस्टाल्ट सिद्धांत:-

गेस्टाल्ट सिद्धांत की स्थापना जर्मनी में 1912 मे हुई।इस सिद्धांत की स्थापना में वरदाइमर ने मूल रूप से योगदान किया। उन्होंने अपने व्यक्तिगत अनुभव के आलोक में दृष्टि प्रत्यक्षीकरण पर विधिवत् रूप से प्रयोग किया, जिसमे कोफका तथा कोहलर ने प्रयोज्यों के

रूप में योगदान दिया।

यह सिद्धांत मूलतः संरचनावादी सिद्धांत के विरोध में विकसित हुआ। गेस्टाल्ट सिद्धांत की मुख्य विशेषता निम्नलिखित है:-

1. सम्पूर्णता-

इस सिद्धांत के अनुसार किसी वस्तु का प्रत्यक्षीकरण उसकी सम्पूर्णता में होता है। व्यक्ति को किसी वस्तु के भिन्न-भिन्न भागों का प्रत्यक्षीकरण अलग-अलग नहीं होता है, बल्कि समग्र रूप से होता है। जैसे- जब व्यक्ति गुलाब के फूल को देखता है तो उसे देखते समय उसकी पंखुड़ियों, उसके रंगो तथा गंध की संवेदनाएँ अलग-

अलग नहीं होती है, बल्कि सम्पूर्ण फूल का ज्ञान एक ही साथ समग्र रूप से होता है।

2. उद्दीपन-क्षेत्र-

वातावरण के उद्दीपन एक उद्दीपन क्षेत्र में रहते हैं। इस उद्दीपन क्षेत्र के सभी उद्दीपनों के बीच एक गहरा संबंध होता है और वे एक-दूसरे पर निर्भर रहते हैं। गेस्टाल्टवादीयों ने उद्दीपन क्षेत्र एक गत्यात्मक सम्पूर्ण माना। कोहलर के अनुसार उद्दीपन क्षेत्र के गत्यात्मक सम्पूर्णता का आधार मस्तिष्क क्षेत्र है। उनके अनुसार मस्तिष्क क्षेत् तथा उद्दीपन क्षेत्र के बीच अनुकूलता पायीं जाती हैं, परन्तु इस अनुकूलता से दोनों में तार दात्मक का परिचय नहीं मिलता है।

3. आकार तथा पृष्ठभूमि-

गेस्टाल्ट सिद्धांत के अनुसार उद्दीपन क्षेत्र आकार तथा पृष्ठभूमि के रूप में संरचित रहता है। उद्दीपन क्षेत्र के जिस भाग का हमें ज्ञान रहता है, उसे आकार कहते है और उद्दीपन क्षेत्र का जो भाग इस ज्ञान को

उत्पन करने में सहायक होता है उसे पृष्ठभूमि कहते हैं। टेबुल पर रखी हुइ पुस्तक के प्रत्यक्षीकरण में पुस्तक आकार है तथा टेबुल पृष्ठभूमि है।

4. क्षेत्र-शक्तियाँ-

गेस्टाल्टवादीयों ने दो प्रकार की क्षेत्र शक्तियों को माना, जिन्हें संयोजक शक्ति तथा निरोधक शक्ति कहते हैं। संयोजक शक्ति में उद्दीपन को आकर्षित करने तथा मिलाने की विशेषता पायी जाती है। यही शक्ति आकार की उत्पत्ति का आधार है। दूसरी ओर निरोधक शक्ति में उद्दीपन को विकर्षित करने तथा अलग करने की विशेषता पायी जाती है यही शक्ति पृष्ठभूमि की उत्पत्ति का आधार बनती है। ये दोनो शक्तियाँ उद्दीपन क्षेत्र में हरसमय सक्रिय रहती है। अतः प्रत्यक्षीकरण के लिए ये दोनो शक्तियाँ आवश्यक है।

5. प्रत्यक्षीकरण के संगठन-

गेस्टाल्टवादी मनोवैज्ञानिकों के अनुसार प्रत्यक्षीकरण की एक मुख्य विशेषता इसका संगठन है। उनके

अनुसार उद्दीपन क्षेत्र संरचित रहता है। कुछ वस्तुएं आकार का रूप धारन कर लेती है और कुछ वस्तुएं पृष्ठभूमि का रूप ले लेती है। इसलिए आकार के उद्दीपन संगठित एवं अर्थपूर्ण होते है।